सशक्त समाज, सुरक्षित शहर अभियान

हम सब की भागीदारी, सुरक्षित बचपन, युवा और नारी

बच्चे हमारा आज हैं। हम इनके कल को सुनहरा करने की बात तो कहते हैं लेकिन उनके आज को लगभग भूल जाते हैं। राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो की ही मानें तो भोपाल से औसतन एक बच्चा रोज गायब हो जाता है। आपने चौक-चौराहों पर कई बार बच्चों को भीख मांगते और कम उम्र में काम करते देखा ही होगा। कुछ बच्चे नशा करते हुए भी मिल जाते हैं क्योंकि उनको आसानी से नशा उपलब्ध होता है। यह सभी कानूनी रूप से गलत है, लेकिन ऐसा होता रहता है क्योंकि हम इस मसले पर अपनी प्रतिक्रिया नहीं देते हैं। हम उसी दुकान से चाय पीते हैं, उसी होटल में खाना खाते हैं जहाँ बच्चे दिन-रात काम में लगे रहते हैं। हम कुछ नहीं बोलते हैं क्योंकि हमारी संवेदनशीलता हमारे अपने परिवार के बच्चों के लिए ज्यादा है। हम बड़ी-बड़ी इमारतों में रहना पसंद करते हैं लेकिन जब ये इमारतें बन रही होती हैं तब वहां के मजदूरों के बच्चे किस हाल में रहते हैं, ये हमारी चिंता का विषय ही नहीं है। मेरे और आपके मोहल्ले में बाल विवाह होता रहता है और हम केवल इसलिए आँखें मूंदे रहते हैं क्योंकि यह हमारे घर में नहीं हो रहा है। पर ये उदासीनता आखिर क्यों... ?

क्या हम ऐसा मानते हैं कि हमारी दुनिया अलग है और उन बच्चों की दुनिया अलग, जबकि ऐसा नहीं है, हम सभी की दुनिया एक ही है। कई बार हम यह मान बैठते हैं कि यह केवल उन बच्चों के जीवन की सच्चाई है जो सड़कों पर रहते हैं, जिनके माता-पिता नहीं हैं, जो झुग्गी बस्ती क्षेत्रों में रहते हैं या फिर वो बच्चे जो कभी परिवार के बड़े आकार के चलते, तो कभी प्राथमिकताओं के बदले जाने पर उपेक्षित होते हैं। जबकि यह स्थिति तो उनकी भी है जो कि मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे होते हैं। बाल लैंगिक शोषण के मामले तो सब तरफ से आते हैं। हम ऐसा मानते हैं कि बच्चे परिवार में महफूज़ हैं लेकिन बच्चों का लैंगिक शोषण वहां भी चरम पर है। हो सकता है कि जिन बच्चों की हम बात कर रहे हैं इनमें से कुछ बच्चों ने अपराध की दुनिया में भी कदम रख लिया हो या रखने की तैयारी हो। पर क्या केवल इसी कारण से कि उनकी परिस्थितियां कुछ भिन्न हैं हम उनके लिए सोचना बंद कर देंगे। उन्हें समाज में वापस लौटने का मौका देना बंद कर देंगे।

आपको जानकर हैरानी होगी कि हमारे शहर में महिलाओं और लड़कियों के अलावा लड़कों के साथ भी लैंगिक हिंसा के मामले सामने आते रहे हैं। लैंगिक शोषण का शिकार बच्चों की संख्या हमें चौंकाती

निरंतर.....

है। पर हम चुप रहते हैं क्योंकि हमारी चुप रहने की आदत हो गई है।

हमने हमारे भोपाल, ताल तलैयों के भोपाल, मंदिर मस्जिदों के भोपाल और हरे-भरे भोपाल को बच्चों और महिलाओं के लिए सुरक्षित शहर बनाने हेतु एक अभियान छेड़ा है, इस अभियान का नाम सशक्त समाज, सुरक्षित शहर रखा है। हम आपका आह्वान करते हैं क्योंकि हर एक बच्चे को उसके हिस्से का बचपन देने की जिम्मेदारी हम सभी की है।

यदि कोई बच्चा
मुसीबत में दिखे, कहीं काम कर रहा हो
या
किसी बच्चे के साथ कोई घटना घटित होने की आशंका हो तो,
नीचे लिखे नंबरों पर फोन करिए।

चुप्पी तोड़, आगे आयें,
बच्चों के लिए
सुरक्षित शहर बनाएं

यह मत सोचिये कि मेरा नाम सामने आएगा तो क्या होगा...? आप चाहें तो इन नम्बरों पर सूचना देने पर आपकी पहचान भी सुरक्षित रखी जा सकती है। तो फिर देर न करें और फोन लगायें क्योंकि हम सब एक दूसरे का हाथ थामकर बच्चों के लिए सुरक्षित शहर बनाने के लिए कृतसंकल्पित हैं। आइये हम सब मिलकर बच्चों के लिए सुरक्षित शहर बनाने में अपनी भूमिका निभाएं.....।

AAWAJ मुस्कान ARAMBH BACHPAN UDAY SOCIAL DEVELOPMENT SOCIETY उदय सामाजिक विकास संस्थान Aide et Action Changing the world through Education Debate unicef

आवाज, मुस्कान, आरम्भ, निवसिड-बचपन, उदय, एड एट एक्शन, डिबेट और यूनिसेफ का साझा प्रयास

हेल्पलाइन नम्बर - 1098, 1091, 1090, 100, 181, 18002332244